Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 1-7

वर्तमान समय में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. मीनाक्षी गोयन्का, प्रवक्ता–सामजशास्त्र,
एम.जी.एम. (पी.जी.) कालेज सम्भल उ.प्र. भारत
पूजा गुप्ता प्रवक्ता गृह विज्ञान,
एम.जी.एम. (पी.जी.) कालेज सम्भल उ.प्र. भारत

गांधी दर्शन ने आज समूचे विश्व में अपनी पहचान बना ली है। गांधी मॉडल को आज विश्व के अन्य देश भी अपना रहे है। **''गांधी मर सकता है लेकिन गांधीवाद हमेशा जीवित रहेगा।''** गांधी विचार की आज जितनी प्रासंगिकता बनी हुई है, उतनी शायद पहले कभी भी नहीं थी। आज इस आतंक और साम्प्रदायिक तनाव में घिरे हुए विश्व के लिए गांधीवाद ही एक अकेला ऐसा रास्ता है, जो नयी दिशा दिखाता है और यही कारण है कि विश्व के ज्यादा से ज्यादा देश इस ओर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके है।

गांधी जी की शक्ति, धार्मिक और नैतिक शक्ति थी और उन्होंने मुनष्य की अन्तरात्मा को जागृत किया। एक शायर के जजबात की वानगी–

''गांधी तू आज हिन्द की एक शान बन गया।
सारी मनुष्य जाति का अभियान बन गया।
तू सत्य अहिंसा दया निस्वार्थ प्रेम से है
आज मृत्युलोक में भगवान बन गया।''

महात्मा गांधी का मानना था कि ''तत्कालिक जरूरते यह नहीं है कि एक धर्म हो, बल्कि यह है कि विभिन्न धर्मो को मानने वालों में आपस में आदर और सहनशीलता हो। हम बेजान समानता नहीं चाहते पर विविधता में एकता चाहते है। परम्पराओं, संस्कारों, जलवायु और दूसरी परिस्थितियों को मिटाने का प्रयत्न किया जायेगा तो वह असफल ही नहीं होगा बल्कि अधर्म भी होगा। धर्मो की आत्मा एक है, परन्तु अनेकों रूपों से प्रकट हुई है ये रूप अनन्त काल तक रहेंगे।''

राष्ट्रपिता गांधी जी के शब्दों में ''यह देश इसलिए महान नहीं है कि यहां संसार का सबसे ऊँचा पहाड़ है या सबसे पवित्र नदी गंगा है बल्कि यह देश इसलिए महान बना क्योंकि यहां हिमालय से भी ऊँचे और गंगा से भी परम पावन मनुष्य पैदा हुए राष्ट्र को आज उन्हीं मनुष्यों की खोज है। ऐसे कुछ इंसान हो जाएं तो देश हर संकट का मुकाबला कर सकता है।''

गांधी जी की प्रसिद्ध कहावत है **''यदि तुम्हारें दाहिने गाल पर कोई थप्पड़ मारता है तो अपना बांया गाल भी उसकी ओर कर दो।''** उनका कहना था, **तुम अपने पड़ोसी से ऐसा ही प्रेम करो जैसे ''तुम स्वयं से करते हो।''**

आज के वर्तमान समय मैं जब हम गांधी जी के विचारों के विषय में चिंतन करते है तो हमें स्पष्ट हेाता है कि गांधी जी के विचारों की व्यापक प्रासंगिकता आज है तभी हमारे देश का नैतिक व आध्यात्मिक विकास संभव है। गांधी जी के विचारों के अनुकरण से हम राष्ट्रीय जीवन में व्याप्त हिंसा, घृणा, विश्वास और अहंकार पर टिकी हुई वर्तमान सभ्यता के विविध दोषों को सरलता से दूर कर सकते है। गांधी जी का मानना था कि ''मैं भारत का उत्थान इसलिए चाहता हूँ कि सारी दुनिया उससे लाभ उठा सके। मैं यह नहीं चाहता कि भारत का उत्थान दूसरो देशों के नाश की नींव पर हो।''

वास्तव में गांधी एक अवधारणा व विचार है, जो अपने जीवन काल में एक संस्था बनकर जिया और मृत्यु के बाद एक सजीव आस्था और वाद के रूप में व्यवस्थित हो गया। गांधी के सत्य, अहिंसा और प्रेम को कहीं दुरूह और कहीं असामान्य की संज्ञा दी गयी है। साधारण व्यक्ति की हमने रूचि के अभाव का भी आरेाप लगाया जाता है यहां हम यह भूल जाते है कि गांधी के अपने परवर्ती भारत के मन को बदलने के लिए इन्हीं नैतिक आदर्शो को अगीकृत किया था। गोखले को भी लगता था कि गांधी सत्याग्रह और अहिंसा के शस्त्र से जीत नहीं सकता किन्तु गांधी जी की आत्मा ने सभी चुनौतियों को स्वीकार किया और आज तक अहिंसा और सत्य का आधार जो व्यक्तिक माना जाता था, गांधी ने उसका समाजीकरण किया।

बापू के राष्ट्र प्रेम की विचारधारा के सम्बन्ध में अनायास 'कामायानी' की यह पंक्तियां आज याद आती है–

''औरों को हंसते देखो मनु,हंसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,सबको सुखी बनाओ।''

गांधी जी की महानता को स्वीकार करते हुए प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइस्टाइन का कथन है कि **''विश्व की भावी पीढ़ियां इस बात पर मुश्किल से ही विश्वास कर पायेंगी कि गांधी नाम का एक हाड़–मांस का पुतला कभी इस धरती पर विचरण करता था।''**

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि अपने अहिंसात्मक अभियानों के द्वारा गांधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को आशा से पहले ही भारत छोड़ने पर विवश कर दिया। अहिंसा द्वारा वह साम्प्रादायिकता की

फैलती लहर को रोकने में समर्थ हो सके, भारत विभाजन के समय।''

अमरीकन पादरी डॉ जॉन हेन्स हान्स का कथन है कि **''ईसामसीह के बाद गांधी जी विश्व के सबसे महान व्यक्ति थे।''**

पश्चिमी विद्वानों ने भौतिकता के माध्यम से शक्ति प्राप्त करनी चाही तो गांधी जी ने अध्यात्मिकता पर बल दिया। गांधी जी सभ्यता के सम्बन्ध में नैतिक दृष्टि से रखते थे। गांधी जी ने कहा कि "Civilization is the made of conduct which point out to man the path of duty" गांधी जी ने पश्चिमी सभ्यता को न अपनाकर प्राचीन युग के सरल व साधारण जीवन की प्रशंसा की। गांधी जी का व्यक्तिगत जीवन सामंजस्य व एकता का उदाहरण है। गांधी जी के अनुसार पश्चिमी सभ्यता व्यक्ति के चरित्र को खराब करती है जबकि भारतीय सभ्यता व्यक्तित्व तथा आत्मा का विकास करती है। गांधी जी ने शक्ति को अहिंसात्मक साधन से पाना चाहता जिसमें नैतिक मूल्यों का समावेश हो। गांधी जी ने कहा था कि आधुनिक युग की शांति शस्त्र द्वारा लायी गयी है जो चिर स्थाई नहीं होगी उनके मत मे यदि हमें नैतिक सभ्यता का विकास करना है तो हमें प्रकृति की तरफ लौटना होगा। जिसका आधार अहिंसा है। अहिंसा ही हमारी समस्याओं का समाधान है।

गांधी जी गीता के इस संदेश में विश्वास करते थे कि व्यक्ति अपने स्वधर्म का पालन कर परमपद प्राप्त कर सकता है। गांधी जी ने अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व संघ के सम्मुख भाषण देते हुए 1927 में कहा था कि सभी धर्म सच्चे है सब धर्मों में कोई न कोई खराबी है सभी धर्म मुझे उतने ही प्रिय है जितना मुझे हिन्दू धर्म।

सर्वोदय विचार को आधुनिक संदर्भ प्रदान करने का कार्य गांधी जी ने ही किया था। गांधी जी के लिए गोपाल कृष्णा गोखले ने लिखा है ''गांधी जी वह सारे गुण है, जो वीरों शहीदों में पाये जाते है, और लोगों को सम्मोहित करने की अनोखी प्रतिभा है। वह आम आदमी को बलिदानी और संघर्षशील बनाने की अद्भुत क्षमता रखते है।''

उनकी इसी उपलब्धि को ध्यान में रखकर प्रसिद्ध कवि एवं गीतकार प्रदीप ने अपने एक गीत के माध्यम से उनके बारे में यह उचित ही कहा है–

''दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल।
सावरमती के संत तूने कर दिया कमाल।।''

सत्याग्रह का विचार और उसका व्यवहार गांधीवाद की आत्मा है तथा वास्तव में उनका अदभुत योग है। एक सत्याग्रही प्रेम के द्वारा बुराई का प्रतिरोध करना चाहता है और कष्ट अपने ऊपर लेकर भी विरोधी को कष्ट नहीं पहुंचाता।

गांधी जी का विश्वास संघर्ष का समाधान इस ढंग से निकालने में था जिसमें दोनों में से किसी पक्ष की हार न हो और दोनों के बीच सद्भावना विकास हो। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी का सत्याग्रह नागरिक अधिकारों का निडरता पूर्ण समर्थन करने के लिए था।

''अहिंसया सत्यबलेन चैव
कार्याव्यसाध्यान्यपि यान्ति सिद्धिम।
इत्थं व्रतं यस्य सदा समृदम
जयत्यसौं मोहनदासगांधी''

''अहिंसा के अनुष्ठान और सत्य के बल से ही असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते है।'' इस प्रकार जिनका व्रत सदैव समृद्धशाली था वे महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी (राष्ट्रपिता) सर्वोत्कृष्ट है।

गांधी जी की लोकप्रिय प्रार्थना थी–

''वैष्णव जन तो तैने कहिए, जो पीर पराई जाने रे।''

सही अर्थो में वैष्णव कौन है? वही जो जानता है कि पर पीड़ा क्या होती है? यह जानता है कि लोग कैसे दुख भोगते है। वही वैष्णव है जो परेशानियों में दूसरी भी मद द करता है। वह न तो झूठ बोलता है, न ही लोभी होता है।

आज गांधीवादी रामचन्द्र राही मानते है कि नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर और कुछ असहमति के बाद भी दलाई लामा गांधी जी से प्रेरणा लेने वाले लोग है। अमेरिका में जब एक छात्र ने कई साथियों पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाई थी तो वहां चर्चा उठी थी कि अहिंसा का पाठ बच्चों को पढ़ाया जाए। गांधी दर्शन पर वहां की स्कूली किताब में पाठ शामिल किया गया।

जेनेवा से प्राप्त समाचार के अनुसार संसार के 43 नोबल पुरस्कार विजेताओं ने दुनिया की तेजी से बदलती हुई हालतो को देखकर सम्मिलित बयान जारी किया है। इस बयन में उन्होंने कहा है–

आज के इंसान में जो बैचेनी है, उसके पीछे दुनिया की आज की हालत है। अगर इसमें कोई परिवर्तन करना है, तो मनुष्य जाति के सामने एक ही रास्ता है। यह रास्ता है सविनय अवज्ञा इस शर्त के साथ कि बुनियादी मानव अधिकारों का ध्यान रखा जाए। करोड़ो लोगां को भूख और मौत की तरफ धकेलने के लिए आज की राजनीतिक और आर्थिक नीतियां कसूरवार है। सबसे ज्यादा कसूर दुनिया के धनी और शक्तिशाली लोगों का है। अगर दुनिया के असहाय लोग अपने भाज्य के विधाता बन जाए, ज्यादा से ज्यादा लोग जीने के बुनियादी अधिकार के सिवा किसी कायदे कानून को नहीं माने, और गांधी जी के अहिंसात्मक संघर्ष के हथियार का उपयोग करें, तो यह निश्चित है कि हम अपनी आंखो के सामने ही इस आफत से छुटकारा पा जाएंगे।''

गांधी का मानना है कि हमें हिंसा से सिफग इसलिए दूर नहीं रहना चाहिए क्योंकि वह गलत है। कभी–कभी

हिंसा गलत नहीं होती। कभी–कभी ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाती है। जिसमें हिंसा को भी न्यायोचित ठहराया जा सकता है। जबकि मनुष्य को कुछ करने या कायरता का व्यवहार करने के बीच निर्णय लेना होता है, और इसी संदर्भ में गांधी ने अनिवार्य हिंसा का प्रावधान दिया है।

गांधी ने लिखा कि किस प्रकार सत्याग्रह की प्रेरणा उन्हें परिवार से प्राप्त हुई। उन्होंने लिखा ''मैंने अहिंसा का पाठ अपनी पत्नी कस्तूरबा से भी पाया। मैंने उसे अपने इच्दाओं के अनुरूप झुकाने की कोशिश की, परन्तु उसने मुझे अन्ततः शर्मिदा कर दिया वह मेरी अहिंसा की शिक्षक बनी और जो मैंने दक्षिणी अफ्रीका में किया वह उसी सत्याग्रह का विस्तार था जो कस्तूरबा ने किया था।''

संस्कृत सूक्ति **''अयं शाश्वतों धर्म एको धरायां न संभाव्यते धर्मतत्ववेषु भेदः''** (पूरी पृथ्वी पर एक ही शाश्वत धर्म है–धर्म के तत्वों में भेद की संभावना ही नहीं है।) का विम्ब जगह–जगह गांधी जी के लेखन में मिलता है।

धार्मिकता के क्षेत्र में गांधी जी के अवदान तो और महत्वपूर्ण है। गांधी जी कहा करते थे कि मैं एक अच्छा हिन्दू हूँ, क्योंकि मैं एक मुस्लिम और अच्छा इसाई भी हूँ। यानी वह सर्वधर्म समभाव को सर्वोपरि महत्ता देते है। हमारे नेता भी वैसे यही कहते है, पर जीवन में इसे कहां लागू करते है। वे तो इधर प्रवचन देंगे और उधर वोट बैंक बनाने की रणनीति में धर्म का इस्तेमाल कर देंगे। मुझे लगता है कि इंसान आज की अराजक व्यवस्था से मुक्ति के लिए गांधीवाद को अवश्य ही अपनाएगा।

न्यूटन और विलिंगटन से महान उन ऋषियों को मानने वाले जिन्होंने प्रारम्भिक काल में ही अहिंसा नियम की खोज की, महात्मा गांधी ने अहिंसा को सक्रिय बल घोषित किया।

जैसा कविवर 'बच्चन' जी ने कहा है–

''बापू की छाती की हर सांस तपस्या थी
आती जाती हल करती एक समस्या थी।''

गांधी का राम राज्य का सिद्धान्त एक राजनैतिक व आर्थिक विचार ही नहीं है, बल्कि यह नैतिक आख्या का परिणाम है। इस समाज में तनाव संघर्ष महत्वाकांशी नहीं होगा। यह आदर्श समाज सामंजस्य, सहयोग, पारस्परिक विश्वास के रूप में परिभाषित किया जायेगा। सकारात्मक अहिंसा जोकि विश्ववाद की ओर बढेगी व समुदाय को एक सामाजिक बंधन प्रदान करेगी। रामराज्य सार्वभौमिक शान्ति व मानवतावादी नैतिकवादी में विश्वास करेगा। इसमें युद्ध क्रूरता को कोई स्थान नहीं होगा।

गांधी के लिए उनका देश आज के देश की तरह नहीं था। उनके लिए देश का मतलब था लोग, देश की जनता, लेकिन आज गांधी के अनुयायी ही उनकी इस अवधारणा को भूलते जा रहे है।

आज के हिंसक होते हुए इस समाज में गांधीवाद की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। हमारे सामने इसे अपनाने के सिवा कोई रास्ता नहीं है या फिर मिटने को तैयार रहना चाहिए सकारात्मक अहिंसा को अपनाकर ही दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकतों का सामना किया जा सकता है। फिर एक दिन चारो ओर मानवता का धवल ध्वज दिखाई दे सकता है। गांधी को सबसे बड़ी प्रासंगिकता इसी में है। एक शायर के शब्दों में–

''हजारों साल में ऐसा मसीहा एक आया था।
कि जिस ने आदमी को आदमी बनना सिखाया था।।''

वैश्वीकरण की वर्तमान समय में तीव्रता से बढती प्रक्रिया में लोगों में गांधी वाद के प्रति रूचि एवं जिज्ञासा बढ़ी है। महात्मा गांधी का व्यवहारिक आदर्शवाद भी काफी सराहनीय रहा है। उन्होंने अपने राजनैतिक आदर्शो को हमेशा व्यवहारिक रूप दिया। वे समाज व धर्म को एक दूसरे के पूरक मानते थे। गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता समाज और व्यवस्था के गहराते संकट के बीच बढ़ती जा रही है। आज इस आतंक और साम्प्रदायिकत तनाव में घिरे हुए विश्व के लिए गांधीवाद ही एक अकेला ऐसा रास्ता है जो नयी दिशा दिखाता है और यही कारण है कि विश्व के ज्यादा से ज्यादा देश इस ओर प्रभावित हुए बिना नहीं रह रहे है। आज जब विश्व एक नये ध्रुवीकरण की छोर अग्रसर है तो गांधी दर्शन आज के समय की मार्गदर्शन बना है। सच तो यह है कि एक विश्व गांधी जी के दर्शन के साथ उदय हो रहा है। जो अहिंसा शांति, आपसी सदभाव और भाईचारे से एक नई विश्व शांति का मार्ग दिखाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. के0डी0 गंगराडे, गांधी जी के आदर्श और ग्रामीण विकास राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली पृ0 87, 2006
2. डा0 माधवी त्रिपाठी, गांधी की विरासत, बाइंकिग बुक्तस जयपुर 2012 पृ0. 188
3. प्रो0 पवन कुमार, भारतीय राजनीतिक विचारक, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2006 पृ0 202
4. जीवन मेहता, राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिशर्स, आगरा 2005, पृ0 276
5. डा0 विष्णुकान्त शुक्ला, उमाकान्त शुक्त श्री गांधीचरितम्, शारदा सदन, मुजफ्फरनगर 1997, पृ0 2
6. डा0 कृष्ण कुमार रतू, समग्र गांधी दर्शन शीतल प्रिन्टर्स जयपुर, 2009, पृ0 73 एवं पृ0 33
7. डा0 रवीन्द्र कुमार, भारत और महात्मा गांधी कल्याण पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2009 पृ0 44
8. डॉ0 शेफाली वाथोनिया, महात्मा गांधी एवं विश्व, एबीडी पब्लिशर्स, जयपुर, 2008 पृ0 44
9. मोहन दास कमरचन्द गांधी, मेरे सपनों का भारत राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010 पृ0 10

10. महात्मा गांधी विचार विधिका पृ0 18 एवं पृ0 19